Treasure Caretaker Training
DIGITAL MONASTERY PROJECT

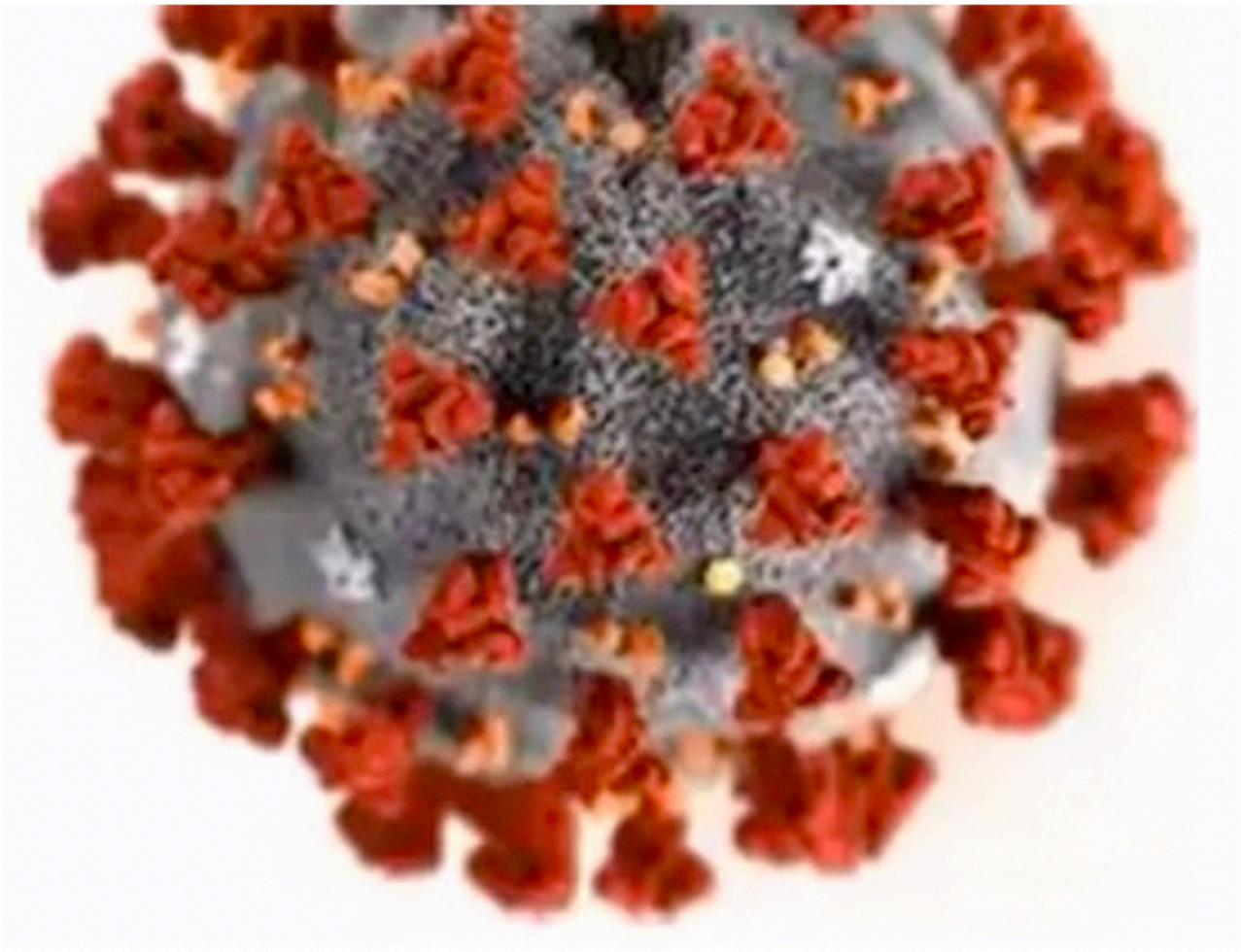

RISK ASSESSMENT: PANDEMIC

जोखिम आंकलन: महामारी

परिचय

मानव संचरण से सुरक्षा

मठों के भीतर सतहों से विषाणु का संचरण

मठ को क्षति पहुंचाए बिना विषाणु संचरण कैसे नियंत्रित करें

सम्पत्ति

निष्कर्ष

अभिस्वीकृति

एन शाफ़्टेल, एमए, एमएससी
डलहौजी विश्वविद्यालय
फेलो, अमेरिकन इंस्टीट्यूट फॉर कंजर्वेशन
फेलो, अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण संस्थान
कैनेडियन एसोसिएशन ऑफ़ प्रोफेशनल कंज़र्वेटर्स
ICOM, ICOMOS सदस्य
©एन शैफ्टेल 2020

Treasure Caretaker Training
DIGITAL MONASTERY PROJECT

treasurecaretaker@icloud.com
www.treasurecaretaker.com

कोविड -१९ काल में मठ की सम्पत्ति की देखभाल

परिचय

कोविड-१९ सम्बंधित चर्चा मुख्य रूप से शारीरिक दूरी, चेहरे के लिए मास्क पहनने और अपने हाथ धोने जैसी अच्छी स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं को लागू करके लोगों को सुरक्षित रखने के बारे में रही है। मठों से निस्संक्रामक (डिसइंफेक्टेंट)और ब्लीच के उपयोग के साथ मठ की सम्पत्ति की सुरक्षा के बारे में, यदि किसी संक्रमित व्यक्ति द्वारा सतह स्पर्श करने के पश्चात् विषाणु उस सतह पर टिका रहेगा और उस विषाणु का मठ के भीतर अन्य जानो को संचरण-- हाल ही में हमें इन विषयो के बारे में अनेक प्रश्न प्राप्त हुए हैं।

क्या मठ की सम्पत्ति द्वारा कोविद-१९ का संक्रमण एक संक्रमित व्यक्ति से भिक्षुओं और सुनामाओ को हो सकता हैं?

वर्तमान विज्ञान के शोध के आधार पर भिक्षुओं और भिक्षुणियों की सुरक्षा हेतु व पूजा और दैनिक जीवन के लिए उपयोगी बौद्ध सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु प्रमुख बिंदुओं का सारांश दिया जा रहा हैं।

मानव संचरण से सुरक्षा

अपने मठ और स्वास्थ्य अधिकारियों की सलाह का पालन करें, जैसे, चेहरे के लिए मास्क पहनना, हाथ धोना और शारीरिक दूरी का अभ्यास करना शामिल है। कई मठ तालाबंदी (लॉकडाऊन) पर हैं, और अधिकांश पर्यटकों और आगंतुकों के लिए बंद हैं।

अपने मठ के द्वार बंद रखना विषाणु को बाहर रखने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम हैं। संक्रमित व्यक्तियों से कम बातचीत व सतहों और सम्पत्ति को न छूने से नाजुक पारंपरिक बौद्ध समपत्ति पर निसंक्रमक (डिसइंफेक्टेंट) छिड़कने की आवश्यकता कम हो जाएगी। सुरक्षा एहतियात के तौर पर अधिक स्पर्श किये जाने वाली सतहों पर निसंक्रमक (डिसइंफेक्टेंट) छिड़के जाते हैं।

विभिन्न देशों में स्थित मठों का वास्तविक विवरण यहां दिया गया हैं:

एक पारंपरिक मठ में रहने वाले भिक्षु का विवरण:

“हमारा मठ अभी तालाबंदी(लॉकडाउन) पर है। मठ ने लगभग सभी लोगो के लिए अपने द्वार बंद कर लिए हैं। कुछ भिक्षु छुट्टी पर थे और उनसे कहा गया था 'यदि आप वापस आना चाहते हैं, तो जल्दी से मठ वापस आ जायें, या यदि आप घर पर रहना चाहते हैं तो कृपया घर पर ही रहें।‘ विषाणु के कारण, मठ में गतिविधियाँ काम हो गयी है, कोई आगंतुक नहीं आते है, और हम सामाजिक दूरी बनाए रखते हैं। मठ बंद होने के कारण, सिवाय भोजन वितरण के, न कोई अंदर जा सकता है और न कोई बाहर आ सकता है। मठ प्रशासन विशेषज्ञों की सलाह का अनुसरण करने की कोशिश कर रहा है। यदि किसी भिक्षु को कोई बीमारी है, या कोई छोटी-मोटी समस्या है, तो मठ में एक क्लिनिक है, और यहाँ सब कुछ प्रदान किया जाता है। यदि विषाणु गंभीर हो जाता है, तो वे मठ में एक विषाणु क्लिनिक स्थापित कर सकते हैं, लेकिन वर्त्तमान में भिक्षु किसी आपात स्थिति या विषाणु के लिए अस्पताल जाएंगे। यदि आवश्यक हो तो विषाणु परीक्षण (टेस्टिंग) उपलब्ध हैं। हम आसपास के समुदाय के सदस्यों को जरूरत के हिसाब से भोजन और अन्य प्रावधान दे रहे हैं।”

- अन्य क्षेत्र के एक मठ के भिक्षु यह विवरण प्रस्तुत करते है:

  "मठ हर भिक्षु के लिए दिन में एक बार बुखार की जांच कर रहा है।

- अत्यंत महत्वपूर्ण अपॉइंटमेंट या कार्यों को छोड़कर भिक्षुओं को बाहर जाने की अनुमति नहीं दिया जाना।

- सभी के लिए प्रवेश द्वार पर निर्मित हाथ धुलाई का नल लगवाना।

- विषाणु के प्रति जागरूकता पर व्याख्यान देना।

- आगंतुकों की निगरानी करना, उदाहरणार्थ, उनका विवरण दर्ज करना।

- भिक्षुओं को विशाल समूहों में एकत्रित होने की अनुमति नहीं देना।

- स्वास्थ्य और सरकारी अधिकारियों के महत्वपूर्ण मोबाइल नंबर रखना।
- राशन का भण्डार कम से कम एक महीने के लिए पर्याप्त हो।
- हम आस-पास के समुदाय की कोई सहायता नहीं कर रहे हैं क्योंकि अभी इसकी आवश्यकता नहीं है।"

एक भिक्षुणी यह वर्णन करती है:

"भिक्षुणियों के मठ के लिए कोई आगंतुक नहीं, यहां तक कि परिवार व पर्यटक भी नहीं।
भिक्षुणियाँ दूसरों की सहायता के लिए बाहर नहीं जा रही हैं, वे अंदर सुरक्षित रहकर सभी के लिये प्रार्थना कर रही हैं।"

एक भिक्षु इस महामारी के महीनों के दौरान नियमों में बदलाव का इस प्रकार वर्णन करता है:

"यहाँ भिक्षुओं को आमतौर पर ग्रीष्मकालीन आश्रय के अतिरिकत, काफी स्वतंत्रता होती है। मठों ने राष्ट्रीय तालाबंदी*(*लॉकडाउन*)* से बहुत पहले, आगंतुकों के लिए अपने द्वार बंद कर दिए थे। पूर्व मे वरिष्ठ भिक्षु बाहर आ-जा रहे थे, लेकिन राष्ट्रीय तालाबंदी*(*लॉकडाउन*)* के बाद वे मठ की दीवारों के भीतर ही हैं।"

यह भिक्षुणी आसपास के समुदाय के साथ बातचीत करते समय सुरक्षा के बारे में चिंतित है:

"मठ तालाबंदी*(*लॉकडाउन*)* में है, कोई भी परिवार या पर्यटक आगंतुक और भिक्षु मठ के द्वार के परे नहीं जा सकते। भिक्षुओं व स्थानीय पुलिस/सेना और सरकार अधिकारियों व सहायता प्राप्त करने वालो के बीच निरंतर मिलना और बातचीत चल रही है क्योंकि मठ उदारतापूर्वक क्षेत्र में काम करने वाले उन मजदूरों को भोजन और बुनियादी आपूर्ति को पूर्ण कर रहा है जिनके पास इस दौरान कोई काम नहीं हैं और जो कि अपना और अपने परिवार का पेट भरने में असमर्थ हैं। यद्यपि यह लेनदेन मठ के बाहर होता है, लेकिन इसके दौरान व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण *(PPE)* लगातार नहीं पहने जाते हैं, और न ही शारीरिक दूरी बनायी जाती है। कुछ अवसरों पर, भिक्षुओं ने मास्क पहने हुए हैं व कुछ ने मास्क और दस्ताने पहने हुए हैं, जबकि, सामुदायिक अधिकारी या प्राप्तकर्ता अक्सर *PPE* नहीं पहने हुए देखे जाते हैं। भेंट प्राप्त करते समय प्राप्तकर्ता को कभी-कभी शारीरिक दूरी बनाये रखने के लिए जगह दी जाती है, लेकिन संभवतया ही कभी वे *PPE* पहनते हैं या प्रदान किए जाते हैं।"

समुदाय के सदस्यों को खाद्य आपूर्ति वितरित करते हुए एक सुनामा*(tsunma)*।

क्योंकि संक्रमित व्यक्ति के हल्के या न के बराबर लक्षण के होने के कारण मठ के भीतर कोविड-१९ लाया जाना संभव हैं बिना किसी की अनुभूति के। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संचरण संक्रमण का मुख्य मार्ग है। इसलिए, ऐसी रणनीतियाँ उपयोगी है जो लोगों को बाहर रखकर इस प्रकार विषाणु को मठ से बाहर रखती है व अंदर मठवासियों को सुरक्षित रखती हैं, और व्यापक निस्संक्रामक को अनावश्यक बनाती हैं। निस्संक्रामक के बारे में इस अध्याय में बाद में चर्चा की गई है।

सारांश

महामारी में मठों को आगंतुकों के लिए बंद करना, मठवासियों की रक्षा करने का एक प्रभावी प्रणाली है। मठ के द्वार का बंद होना अपने आप में एक परंपरा भी है।

मठों के भीतर सतहों से विषाणु का संचरण

नाक और मुंह को ढकने वाले मास्क पहनना और सुरक्षित दूरी बनाना विषाणु के प्रसार को रोकने के सबसे महत्वपूर्ण उपाय हैं। हालांकि, संयोग से लोग दूषित सतहों को छूकर और फिर अपनी आंख, नाक या मुंह को छूकर कोविड-१९ को पकड़ सकते हैं। सैद्धांतिक रूप में, उदाहरण के लिए, यदि मठ के भीतर सक्रिय एक भिक्षु, भिक्षुणी या समुदाय के सदस्य को कोविड-१९ है और वह एक घंटे पर साँस छोड़ते या खाँसते हैं, और यदि कोई अन्य व्यक्ति जल्द ही उस घंटे को उठाता है, तो विषाणु प्रसारित हो सकता है।

मठ में अधिकांश थांगका, मूर्तियों, वस्त्रों, पूजा के बर्तनों, दीवार चित्रों, ग्रंथों आदि के लिए विषाणु से जोखिम संभवतः कम है। मानव शरीर के बाहर सतहों पर विषाणु कितने समय तक जीवित रहता है? कोविड-१९

ग्लाइकोल प्रोटीन स्पाइक्स के साथ एक मेम्ब्रेन-एन्वेलप नुमा विषाणु है। यह सूखे और हवा के संपर्क में, और उच्च तापमान, उच्च सापेक्ष आर्द्रता, और उच्च पराबैंगनी प्रकाश तरंगों के साथ सूर्य की रोशनी में गुणहीन हो जाता है। चूंकि यह शोधकर्ताओं के लिए एक नया विषाणु है, इसलिए वे पूर्व के विषाणुओं के आधार पर जानकारी साझा कर रहे हैं, और अधिक तथ्यों की खोज कर तेजी से अद्यतन कर रहे हैं।

उदाहरणतः, एक संक्रमित भिक्षु पूजा के दौरान चोपोन(chopon) था, तो क्या अन्य भिक्षु उसके स्पर्श से संक्रमित हो सकते हैं? इसका अभी तक कोई निश्चित उत्तर नहीं है। हम विषाणु को नहीं देख सकते इसे आसानी से निर्धारित करने के लिए। हालांकि, अगर वह भिक्षु दूसरों पर सांस लेता है, तो यह बहुत खतरनाक हो सकता है।

विषाणु की ताकत कमजोर होने लगती है किसी व्यक्ति से सामग्री में स्थानांतरित होते ही। वर्तमान में ठीक से ज्ञात नहीं है कि विषाणु को स्वाभाविक रूप से निष्क्रिय होने में कितना समय लगता है। सामग्री की प्रकृति भी एक कारक है। उदाहरण के लिए, गोम्पा सजावटी वस्त्र जैसी नरम बनावट वाली सतह की तुलना में, विषाणु को एक चिकनी धातु की सतह पर (जैसे एक घण्टा) लंबे समय तक बने रहने का अनुमान किया जाता है।

पूर्व शोध के आंकड़ों के आधार पर, वर्तमान में दिशानिर्देश है कि कागज और पेपर-बोर्ड उत्पादों के लिए, सुरक्षा के लिए २४ घंटे न्यूनतम हैं। उदाहरण के लिए, यदि विषाणु से संक्रमित एक मठवासी पारंपरिक ग्रन्थ या पुस्तक पढ़ रहा था, तो उसे एक दिन के लिए अछूता छोड़ दिया जाना चाहिए, और इससे भी बेहतर, दो दिन के लिए। अन्य विशेषज्ञ स्त्रोत्र कहते हैं कि कुछ सतहों पर विषाणु अधिकतम ९ दिनों तक जीवित रह सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान जारी है। मठ की सम्पत्ति को स्पर्श करने के बाद उन्हें प्रथक या एकान्त में करना उन्हें "विषाणुरहित" करने का सबसे अच्छा और सुरक्षित उपाय है।

सारांश

वैज्ञानिक रूप से अभी इसकी पुष्टि होनी शेष है कि सतहों पर से विषाणु का संचरण संभव है, इसलिए दस्ताने पहनने, साबुन से हाथ धोने आदि और हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग करने को बढ़ावा दिया जा रहा हैं। एक संक्रमित व्यक्ति द्वारा मठ की रसोई और अन्य प्रसवों में लाई गई आपूर्ति पर विषाणु के सक्रिय रहने के बारे में भी चर्चा हो रही है।

मठ की सम्पत्ति के विषय हेतु, लोग अगर वस्तुओं को स्पर्श ना करे तो कोई संचरण संभव नहीं होगा। उदाहरण के लिए, यही किसी थंगका या मूर्ति पर खांसने के कारण विषाणु जमा हो गया हो, तो उसे कुछ दिनों के लिए एकांत में रहने दे, यह विषाणु को मठों में फैलने से रोकने के लिए सबसे उपयोगी उपाय है।

मठ की सम्पत्ति को क्षति पहुंचाए बिना विषाणु संचरण कैसे नियंत्रित करें

मठ व समुदाय के अंदर रहने वाले एक संक्रमित व्यक्ति जिसने ध्यान अभ्यास आदि में उपयोग किए जाने वाली मठ की सम्पत्ति को भी स्पर्श किया हो, ऐसी स्थिति में कोविड-१९ विषाणु के संचरण के संबंध में मठों और समुदायों में कई प्रश्न हैं।

बौद्ध मठों के निवासियों द्वारा मठ में यह अभ्यास किये जा रहे है जैसे- तालाबंदी(लॉकडाउन), यात्रा करने या संक्रमित होने वालों के लिए पृथक्करण , सामाजिक दूरी, बार-बार हाथ धोना व मास्क और दस्ताने पहनना। मठ के परिसर की सफाई में साबुन, सॉल्वैंट्स और विभिन्न सामग्रियों के मिश्रित रासायनिक सैनिटाइज़र का भी उपयोग किया जाता हैं।

एक मठ से हमें ज्ञात हुआ है कि वे कोई निस्संक्रामक उपयोग नहीं कर रहे हैं, वे केवल नियमित रूप से निर्धारित सफाई और अतिरिक्त हाथ धोने का पालन कर रहे है। यह दृष्टिकोण प्रभावी हो सकता है जहां पहले से ही बीमारी का प्रकोप नहीं हो। यदि किसी मठ और आसपास के समुदाय के भीतर संक्रमण हैं, तो कई देशों में मठ परिसर में विभिन्न मिश्रणों के साथ छिड़काव और पोंछ रहे हैं।

यद्यपि चिकनी, कठोर, अक्सर छूने वाली सतहों जैसे दरवाज़े के हैंडल और चीनी मिट्टी के बरतन की सफाई की लगातार संस्तुत की जाती है, वही तकनीक नाजुक और समृद्ध थांगका, मूर्तियों, ग्रंथों, वस्त्रों आदि पर लागू नहीं की जा सकती है। हम सुझाव दे रहे हैं कि कुछ उपयोग हैं करने के लिए व उपयोगो से बचना हैं, ताकि मठवासी और मठ की सम्पत्ति दोनों का जीवन लंबा और लाभकारी हो, और हर मठ में यही लक्ष्य हैं।

उधारणार्थ, भिक्षु एक चॉपन या कुनियर हो व कोविड-१९ विषाणु से बीमार हो, तो आपका मठ, मठ सुविधाओं को साफ और निस्संक्रमित करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य दिशानिर्देशों का पालन कर सकता है, हालांकि हम मठ की सम्पत्ति की सफाई और निस्संक्रमित करने का सुझाव या अनुशंसा नहीं कर रहे हैं।

नाजुक थांगका और मूर्तियों आदि पर व्यापक रूप से निस्संक्रामक लगाने के बजाय, यह ज्ञात करना आसान और कम हानिकारक होगा कि वह किसके साथ निकट संपर्क में थे व दिन के दौरान उसने किन मठ की महत्व्यपूर्ण वस्तुओं को स्पर्श किया। सामुदायिक संचरण के माध्यम से इसे और फैलाने से बचने के लिए परीक्षण किया जायेगा और पृथक्करण का भी पालन किया जायेगा।

जिस तरह से लोग १४ दिनों के लिए आत्म-पृथक्करण का पालन करते है, मठ की उन वस्तुओं को जिनका संक्रमित व्यक्ति द्वारा स्पर्श किया गया हो, रासायनिक सफाई के अधीन होने के बजाय कुछ दिनों के लिए निष्क्रिय पृथक्करण में रखना अधिक उपयोगी होगा। पैसिव आइसोलेशन को क्वारंटाइन भी कहा जाता है। मठ की सम्पत्ति के लिए संगरोध, चाहे एक संग्रहालय में, या शेडरा(shedra), पुस्तकालय, अभिलेखागार, या एक मठ में ही, अक्सर उपयोग किया जाता है जब कुछ वस्तुओं में सक्रिय मोल्ड या कीट का संक्रमण होता है। यह व्यापक संदूषण को रोकता है और क्षति को सीमित करता है।

वर्तमान में क्वारंटीन करना लोगों और वस्तुओं दोनों के लिए एक पद्दति है, जो संक्रमण को फैलने से रोकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई भिक्षुणी जो कोविड-१९ से ग्रस्त हो व उसने हाल ही में पुस्तकालय का भी उपयोग किया हो और पुस्तकों या पारंपरिक ग्रंथों में से किसी एक को पढ़ा है, तो भिक्षुणी को स्वयं ही क्वारंटाइन कर दिया जाएगा। पुस्तकालय और ग्रंथों को निस्संक्रामक से पोंछने या स्प्रे करने की सलाह नहीं दी जाती है। मठ या स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा मजबूत निस्संक्रामक तकनीकों का उपयोग करने का सुझाव दिया जाता है भिक्षुणी के कमरे और सामान्य क्षेत्रों के लिए जहां वह हाल ही में उपस्थित थी। पुस्तकालय या विशिष्ट पुस्तकों पर निस्संक्रामक स्प्रे या पोंछने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, पुस्तकों और ग्रंथों का उपयोग कम से कम ४८ घंटों तक नहीं किया जाना चाहिए ताकि उस पाठ को पढ़ने वाली अगली भिक्षुणि में विषाणु का प्रसार न हो।

जब बौद्ध सम्पत्ति को चंद्र पंचांग के अनुसार उपयोग के लिए भंडारण से बाहर लाया जाता है, तो भंडारण क्षेत्र में उनकी वापसी प्राकृतिक संगरोध(क्वारंटाइन) समय प्रदान करती है। सुरक्षा व सम्मान हेतु कुनियर और चॉपोन दस्ताने पहन सकते हैं और बार-बार हाथ धो सकते हैं।

मठ के भंडारण कक्ष पृथक्करण के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकते हैं।

संगरोध(क्वारंटाइन) का नैतिक गुण यह है कि यह आपके मठ की सम्पत्ति को कोई क्षति नहीं पहुंचाता है। यदि आप उन्हें कुछ दिनों तक नहीं स्पर्श करते हैं तो कुछ भी हानि नहीं पहुंचेगी। हमारे हाथों या फर्श और दीवारों को विषाणुरहित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले रसायन स्थायी क्षति पहुंचा सकते हैं।

सफाई और निस्संक्रमित करने में अंतर है। मठ परिसर में कठोर सतहों और चिकनी सतहों के लिए- जिन्हें अक्सर नियमित रूप से साफ किया जाता है, उदाहरण के लिए शौचालय-यह अनुशासित है कि निस्संक्रमित करने से पूर्व उनकी सफाई की जाए । सफाई कुछ विषाणु कणों को हटा सकती है और निस्संक्रामक में ऐसे रसायन होते हैं जो विषाणु को निष्क्रिय करने में सहयोग करते है। सतहों को निस्संक्रमित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मजबूत रसायन उनका सम्पर्क में आने वालों को हानि पहुंचा सकते हैं, इस प्रकार व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) पहनने की आवश्यकता होती है, जिसमें दस्ताने और उपयुक्त मास्क और कपड़े शामिल हैं।

बौद्ध मठ की सम्पत्ति के संदर्ब में, "सफाई" "निस्संक्रामक" के समान नहीं है, फिर भी संक्रमण को रोकने के दोनों प्रयासों से स्थायी क्षति हो सकती है। मठ की सम्पत्ति को नियमित रूप से फर्श और दीवारों, रसोई और शौचालय के भाँति में साफ नहीं किया जाता है, न ही वे निरंतर सफाई के लिए बने होते हैं।

एक मठवासी व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण *(PPE)* पहने हुए मठ के भोजन कक्ष में निस्संक्रामक का छिड़काव करता हुआ।

यह माना जाता है कि रक्षा की पहली कड़ी हाथ धोना है, और कई मठों ने प्रवेश द्वार पर और मठ परिसर में हाथ धोने के स्थान स्थापित किए हैं। लोग हैंड सैनिटाइज़र का भी इस्तेमाल कर रहे हैं। उच्च अल्कोहल वाला हैंड सैनिटाइज़र सबसे प्रभावी माना जाता है, और इसका उपयोग दुनिया में हर जगह व्यापक रूप से किया जाता है जहाँ यह उपलब्ध है। दरअसल, कई दुकानों में यह बिक चुका है और लोग अपने-अपने फार्मूले मिला रहे हैं। हैंड सैनिटाइज़र, जब ठीक से उपयोग किया जाता है, तो यह लोगों के लिए सुरक्षित स्थिति बना सकता है।

परन्तु, मठ की सम्पत्ति के पास हैंड सैनिटाइज़र काफी हानिकारक हो सकता है। सम्पत्ति में कई सामग्रियाँ पाई जाती हैं जो अलकोहाल में घुल जाती हैं, उदाहरण के लिए, पेंट, रंग और स्याही।

इंटरनेट पर हैंड सैनिटाइज़र के कई फॉर्मूला उपलब्ध हैं जो रासायनिक रूप से बहुत मजबूत हैं। सोशल मीडिया पर उपलब्ध "इसे स्वयं मिलाएं(मिक्स इट योरसेल्फ)" हैंड सैनिटाइज़र के कुछ फ़ार्मुलों में पतला ब्लीच शामिल है। हालांकि सामान्य तौर पर निस्संक्रामक के लिए ब्लीच की अनुशंसा की जाती है, यहां तक कि थोड़ा सा भी दुरुपयोग नुकसान पहुंचा सकता है। हैंड सैनिटाइज़र और निस्संक्रामक जिनमें ब्लीच होता है वे साँस लेने और त्वचा पर मनुष्यों को हानि पहुँचा सकते हैं और मठ की सम्पत्ति को भी क्षति पहुँचा सकते हैं।

यहां तक कि दुकान से खरीदे गए हैंड सैनिटाइज़र में अक्सर अल्कोहल जैसे सक्रिय अभिकर्मकों के अलावा, लोगों के लिए उपयोग करने के लिए उन्हें अधिक सुखद बनाने के लिए सामग्री होती है। अधिकांश हैंड सैनिटाइज़र जैल के रूप में होते हैं जिनकी आकर्षक महक और रंग होते हैं, और आपके हाथों को मॉइस्चराइज़ करने का दावा करते है। कुछ उत्पाद "पूर्णतः प्राकृतिक" होने का दावा करते हैं और कुछ सभी जीवाणु(बैक्टीरिया) को मारने का दावा करते हैं। हैंड सैनिटाइज़र में ये जोड़े गए स्किन-सॉफ्टनर और कलरेंट भी समपत्ति को दाग और स्थायी रूप से ख़राब कर सकते हैं। और हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग करने के बाद आपके हाथ अक्सर चिपचिपे हो जाते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आपके हाथ पूरी तरह से सूखे हों और किसी भी चीज़ को छूने से पहले चिपचिपे न हों! संग्रहालय के वैज्ञानिकों द्वारा हैंड सैनिटाइज़र का परीक्षण किया गया है और यह निर्धारित किया गया है कि अवशेष समय के साथ कागज को हानि पहुंचा सकते हैं।

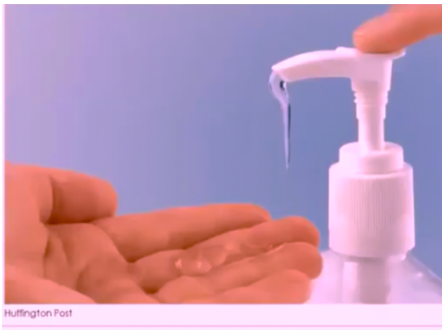

हालांकि हैंड सैनिटाइजर बीमारी की रोकथाम में कारगर हो सकते हैं,
वे सम्पत्ति को स्थायी क्षति भी पहुंचा सकते हैं।

निस्संक्रामक, क्लीनर और सैनिटाइज़र का- चाहे उन्हें कुछ भी कहा जाता हो- एक अनुशंसित तीन-चरण की प्रयोग प्रक्रिया है: छिड़कना/लगाना, सतह से प्रतिक्रिया के लिए निर्दिष्ट समय छोड़ना, और फिर हटाना(धोना)। छिड़कना/लगाना, संपर्क और धोने का समय विशिष्ट रासायनिक मिश्रण के साथ भिन्न होता है और निर्माता द्वारा दिए गए निर्देशों पर होना चाहिए।

आपके निस्संक्रामक मिश्रण में कौन से रासायनिक यौगिक हैं? क्या आपने उसका फॉर्मूला पूछा? क्या आप अनुशंसित प्रक्रिया और सुरक्षा सावधानियों से अवगत हैं? आप छिड़काव कर रहे हैं या पोंछ रहे हैं? संक्षेप में, इन उत्पादों का उपयोग मठ की सम्पत्ति पर कभी नहीं किया जाना चाहिए।

मठ की सम्पत्ति पर सीधे निस्संक्रामक "वाइप्स" प्रयोग करने से स्थायी क्षति हो सकती है।

निस्संक्रामक छिड़काव का फॉर्मूला व्यापक रूप से भिन्न होता है और अनुप्रयोग तकनीक का भी। जब आप अपने मठवासियों की रक्षा कर रहे हों तो अपने मठ की सम्पत्ति की रक्षा के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि छिड़काव क्षेत्र को सावधानी से लक्षित किया जाए, क्योंकि एरोसोल छिड़काव की बूंदें अपेक्षा से अधिक यात्रा कर सकती हैं और पास में मठ की सम्पत्ति को हानि पहुंचा सकती हैं।

एरोसोल स्प्रे अपेक्षा से अधिक यात्रा कर सकता है, जिससे सम्पत्ति को स्थायी क्षति हो सकती है।

हम सभी जानते हैं कि अपने मठ के ग्रंथों व अन्य सम्पत्ति पर सीधे किसी भी तरल पदार्थ, छिड़काव या फ्यूमिगेंट्स का उपयोग नहीं करना श्रेयस्कर है। इसलिए, अब उन्हें ग्रंथों व अन्य सम्पत्ति के निकट छिड़कते समय ध्यान रखना आवश्यक है। वे सभी समाधान जो स्वास्थ्य कारणों से छिड़काव और पोंछने के लिए उपयोग किए जा रहे हैं, मठ की सम्पत्ति को भी क्षति पहुंचा सकते हैं। इन समाधानों के परिणामस्वरूप धुंधलापन और झुर्रियां पड़ सकती हैं व स्याही और किताब-कवर कपड़े और अन्य वस्त्रों में डाई और प्रिंट का बिखरना भी शुरू हो सकता है।

कई पेंट और डाई तरल पदार्थ, स्प्रे और फ्यूमिगेंट्स में घुल सकते हैं।

इस कारपेट का लाल रंग पानी/अल्कोहल विलायक सफाई एजेंट में घुलनशील था।

मठ के कुछ क्षेत्रों में, जैसे सार्वजनिक क्षेत्रों में और दरवाज़े के हैंडल जैसी कठोर सतहों पर छिड़काव का अपना स्थान होता है, जो विषाणु को अधिक समय तक रोके रखेगा। कुछ सिरेमिक या धातुओं को सुरक्षित रूप से निस्संक्रामक किया जा सकता हैं।

मठ की सम्पत्ति के लिए छिड़काव, या निस्संक्रामक/क्लीनर उपयोग करने की कोई भी विधि सुरक्षित नहीं है। हाथ धोना और दूषित होने से बचाने के लिए डिस्पोजेबल दस्ताने पहनना लोगों और मठ की सम्पत्ति दोनों के लिए सुरक्षित है।

वैज्ञानिक और मठ के अधिकारी वास्तव में यह नहीं जानते हैं कि कितनी संभावना है कि कम स्पर्श करि गयी सतह, उदाहरण के लिए, गोम्पा की दीवार पर थांगका, इस विषाणु को प्रसारित कर सकता है। यह अक्सर छूने वाली सतहों के विपरीत होता है, जैसे कि दरवाज़े के हैंडल की सख्त, चिकनी सतह। इसे आसानी से साफ और निस्संक्रामक किया जा सकता है। ये उपयोगितावादी सतह मठ के खजाने समपत्ति से उनके स्थायित्व और उद्देश्य में भिन्न हैं।

मठ सम्पत्ति के लिए, किसी भी संभावित संदूषण को रोकने या उससे निपटने के लिए बस पृथक्करण का उपयोग करें। निस्संक्रामक समाधान कई मूल्यवान और सशक्त सामग्रियों को हानि पहुंचाएंगे।

गोम्पा में फ्यूमिगेंट या निस्संक्रामक का छिड़काव करते समय यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए कि किसी प्रकार का छिड़काव मठ की सम्पत्ति तक नहीं पहुंचे।

कई मठों ने सूचित किया हैं कि उनके पास ऐसे PPE पहन कर निस्संक्रामक का छिड़काव करने वाले दल हैं जिन्हें विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित किया गया हैं। वे इन प्रयासों में सहायता के लिए अन्य मठों में भी जाते हैं जब उन्हें ऐसा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे अन्य मठों में काम करते समय PPE पहनते हैं और सामाजिक दूरी बनाए रखते हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि वे किन रसायनों का उपयोग कर रहे हैं, उनके कार्य के अंतर्गत गोम्पा में ब्लीचिंग पाउडर के छिड़काव वर्णित किया गया है। इस कार्य की कुछ छवियों में ग्रंथों, मूर्तियों और थांगका पर या उसके पास छिड़काव करते दिखाया गया है।

कुछ उपयोगी सुझावों में छिड़काव से पूर्व ही मठ की संपत्ति को कक्ष में ढक्क कर रखना शामिल हैं। इससे भी अधिक उत्तम होगा कि मठ की संपत्ति से दूर कक्ष के बाहर पोछे या खद्दर पर सीधे सफाई/निस्संक्रामक लगाए और फिर सम्पत्ति को स्पर्श करे बिना कक्ष के भीतर पोछे /खद्दर का उपयोग किया जाये।

मठों की अन्य छवियों में दीवार चित्रों के साथ आंतरिक और बाहरी दीवारों पर छिड़काव करते दिखाया गया हैं। भिक्षुओं का कहना हैं कि वे ब्लीच या अल्कोहल युक्त संस्तुत निस्संक्रामक के घोल का उपयोग कर रहे हैं, जिन्हें सतहों पर विषाणु के अवशेषों को नष्ट करने के लिए प्रभावी माना जाता हैं। दीवार पर चित्र आसानी से और स्थायी रूप से निस्संक्रामक और सफाई के घोल से क्षतिग्रस्त हो जाती हैं।

निष्कर्ष

विषाणु का संकट लोगों के लिए हैं। विषाणु से सम्पत्ति के लिए सबसे बड़ा जोखिम निस्संक्रामक करना है। विषाणु के संचरण को आप लोगों में कैसे रोक सकते हैं?

निसंदेह, मानव जीवन सर्वप्रथम है, और यह आपदा प्रतिक्रिया प्रशिक्षण में सिखाया जाता है। बौद्ध धर्म के पालन करने हेतु मठ की सम्पत्ति महत्वपूर्ण हैं। बिना सम्पत्ति को हानि पहुंचाए स्वास्थ्य के लिए उपाय प्रभावी ढंग से लागु किए जा सकते हैं ।

सदैव ऐसे निस्संक्रामको का उपयोग करें जिन्हें कोविड-१९ के विरुद्ध उपयोग के लिए अनुमोदित किया गया हो। यदि सम्पत्ति के अलावा अन्य सतहों को निस्संक्रामक की आवश्यकता है, तो ऐसी प्रणाली का उपयोग करें ताकि अनजाने में भी ग्रंथों, थांगका, मूर्तियों, दीवार चित्रों आदि पर छप या छिड़काव न पड़े।

साधारण पृथक्करण प्रभावी है, और नाजुक विरासतन सम्पत्ति के निकट या उस पर सफाई, छिड़काव, ब्लीच, या निस्संक्रामित करने की कोशिश करने से अधिक सुरक्षित है। मठ के कार्यवाहक यह जानते हैं। हमारी प्रतिक्रियाएँ ही मठवासियों के स्वास्थ्य और मठ की सम्पत्ति की दीर्घायु दोनों को प्रभावित करती हैं। हमें कोविड-१९ की प्रतिक्रिया के लिए सावधानीपूर्वक तकनीकों का चयन करने की आवश्यकता है, जो प्रभावी और उपयुक्त दोनों होनी चाहिए। भले ही किसी संक्रमित व्यक्ति ने नाजुक सम्पत्ति को स्पर्श किया हो तब भी सबसे सुरक्षित प्रतिक्रिया समय-बद पृथक्करण है। तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि विषाणु स्वाभाविक रूप से निष्क्रिय न हो जाए।

कृपया प्रश्नों के लिए ऐन शाफ़्टेल से संपर्क करें-treasurecaretaker@icloud.com तथा 0019022221467

Acknowledgments
अभिस्वीकृति

तकनीकी चर्चा और दस्तावेज़ समीक्षा के लिए कनाडा के संरक्षण संस्थान के वरिष्ठ संरक्षण विकास सलाहकार आइरीन कार्स्टन का आभार।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया कैनेडियन संरक्षण संस्थान की इस उत्कृष्ट रिपोर्ट को यहाँ देखें-https://www/cac-accr/covid-19/

पेमा चोड्रोन फाउंडेशन, ख्यंटसे फाउंडेशन, शम्भाला ट्रस्ट, शेली और डोनाल्ड रुबिन फाउंडेशन, ओरेकल कॉर्पोरेशन, हेनरी मिंग शेन, एनी थॉमस डोनाघी तथा **बौद्ध सम्पत्ति संसाधनों के संरक्षण** हेतु वित्तपोषण करने वाले ऐसे अनेक अन्य संस्थानों का हार्दिक आभार हैं।